

V. वित्तीय बाज़ार

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाज़ार

वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही के दौरान, अमरीका को छोड़कर, विकसित प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं ने अल्पकालिक ब्याज दरों को और अधिक बढ़ा दिया क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल एवं अन्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ी हुई थीं और घरेलू स्तर पर उनकी मांग बहुत अधिक थी, इसलिए इससे उत्पन्न महंगाई दर के प्रभाव को सीमित करने हेतु केंद्रीय बैंकों ने अपनी नीतिगत दरें बढ़ा दीं (सारणी 33)। यूरोपियन सेंट्रल बैंक ने अपनी नीतिगत दरें 3 अगस्त 2006 तथा 5 अक्टूबर 2006 को 25 आधार अंक तक बढ़ाई जबकि ब्रिटेन ने भी 3 अगस्त 2006 को नीतिगत दर 25 आधार अंक तक बढ़ा दी। विस्तारित अवधि तक शून्य ब्याज दर बनाए रखने के बाद जापान ने भी बैंक ऑफ जापान ने भी संपाश्विक रहित दैनिक मांग दर (मार्च 2006 से मौद्रिक नीति के परिचालन के लक्ष्य के रूप में अपनाया गया) को 25 आधार अंक बढ़ा दिया। अन्य विकसित अर्थव्यवस्थाएं, जैसे, आस्ट्रेलिया और स्विटजरलैंड ने भी इस तिमाही के दौरान अपनी नीतिगत दरों को बढ़ाया। दूसरी ओर, अमरीका में अल्पकालिक दरें कम हुईं क्योंकि फ़ेडरल खुला बाज़ार समिति ने जून 2006 के अंत से होने वाली उसकी तीन बैठकों में प्रत्येक में फ़ेड फ़ंड दर को अपरिवर्तित रखा। उभरते हुए बाज़ार की अर्थव्यवस्थाओं में, दक्षिण कोरिया में अल्पकालिक ब्याज दरों में वृद्धि हुई क्योंकि केंद्रीय बैंक ने नीतिगत दर बढ़ा दी। अन्य

अर्थव्यवस्थाओं, जैसे, ब्राज़ील, मलेशिया और फिलीपीन्स में अल्पकालिक ब्याज दरें कम हुईं क्योंकि उनके केंद्रीय बैंकों ने या तो दरें कम कर दीं या उन्हें अपरिवर्तित बनाए रखा।

अल्पकालिक दरों की मिली-जुली स्थिति की तुलना में प्रमुख विकसित अर्थव्यवस्थाओं में सितंबर 2006 को समाप्त तिमाही में दीर्घकालिक सरकारी बांडों पर अर्जन में कमी हुई है। यह आय, जो जून 2006 को समाप्त तिमाही में बढ़ी थी, कम होने लगी क्योंकि कच्चे तेल की कीमतें कम होने लगी थीं, अमरीका में आर्थिक विकास की दर कमजोर रहने के संकेत थे तथा अमरीका में मौद्रिक कठोरता में एक ठहराव बना हुआ था (चार्ट 31)। जून 2006 के अंत से लेकर सितंबर 2006 के अंत के दौरान 10 वर्षीय अर्जन में अमरीका में 66 आधार अंक, यूरो क्षेत्र में 42 आधार अंक तथा जापान में 30 आधार अंक की गिरावट हुई। जून 2006 के प्रारंभ से ही 10 वर्षीय अमरीकी बांडों पर आय सामान्यतया 2 वर्षीय बांडों की आय से कम रही। संप्रभु (सावरिन) ईएमई बांडों पर स्प्रेड, जो मई-जून 2006 में बढ़ा था जिसका कारण जोखिमों का पुनर्मूल्यांकन था, जुलाई-अगस्त 2006 में कम हो गया क्योंकि अप्रैल 2006 के दौरान इसका स्तर निम्न बना रहा।

वैश्विक इक्विटी बाज़ार में मई 2006 के मध्य तथा जून 2006 के प्रारंभ में हुई भारी बिक्री से जो नुकसान हुआ था उसे वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही

सारणी 33 : अल्पावधि ब्याज दरें

(प्रतिशत)

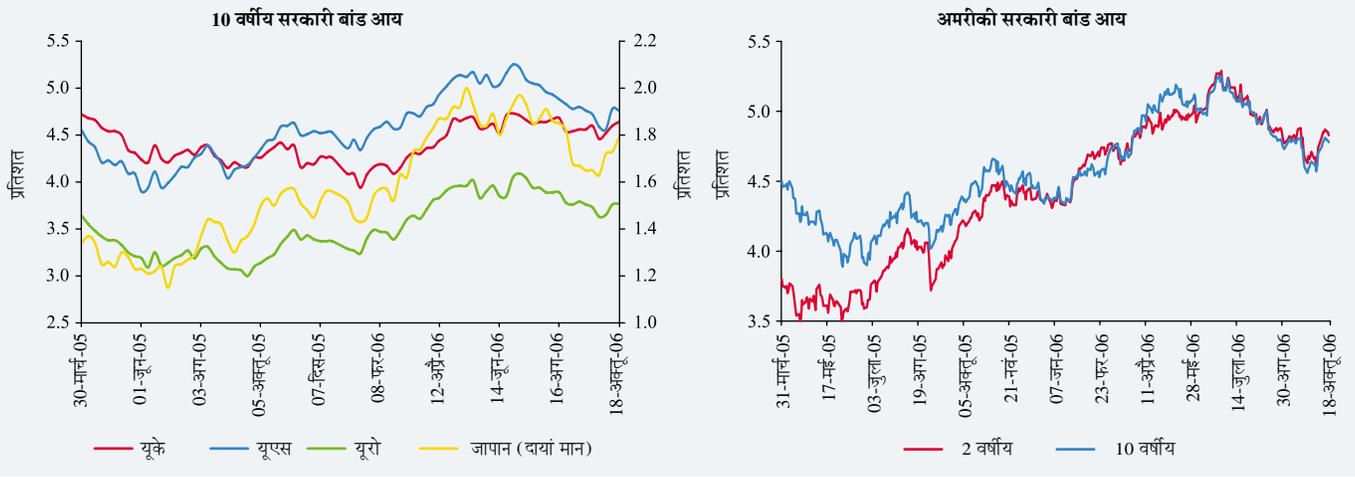
क्षेत्र/ देश	समाप्त पर				
	मार्च 2005	मार्च 2006	जून 2006	सितंबर 2006	अक्टूबर 2006 @
1	2	3	4	5	6
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं					
यूरो क्षेत्र	2.15	2.80	3.06	3.38	3.51
जापान	0.02	0.04	0.24	0.34	0.34
स्वीडन	1.97	1.99	2.23	2.55	2.56
यूके	4.95	4.58	4.70	5.02	5.08
अमरीका	2.90	4.77	5.48	5.21	5.24
उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाएं					
अर्जेंटीना	4.56	9.63	10.00	10.38	10.13
ब्राज़ील	19.25	16.54	15.18	14.17	14.16
चीन	2.25	2.40	3.00	2.95	3.00
हांग कांग	2.79	4.47	4.67	4.20	4.18
भारत	5.37	6.11	6.36	6.60	6.65
मलेशिया	2.82	3.51	3.93	3.85	3.80
फिलीपीन्स	7.25	7.38	8.00	7.63	7.75
सिंगापुर	2.06	3.44	3.50	3.44	3.50
दक्षिण कोरिया	3.54	4.26	4.57	4.63	4.61
थाइलैंड	2.64	5.10	5.40	5.40	5.30

@ : 18 अक्टूबर 2006 की स्थिति के अनुसार।

टिप्पणी : भारत के आंकड़ें 91 दिवसीय खजाना बिल दर के हैं और अन्य देशों के लिए 3 माह मुद्रा बाज़ार दरों के हैं।

स्रोत : दि इकॉनॉमिस्ट।

चार्ट 31: दीर्घकालिक आय - उन्नत अर्थव्यवस्थाएं



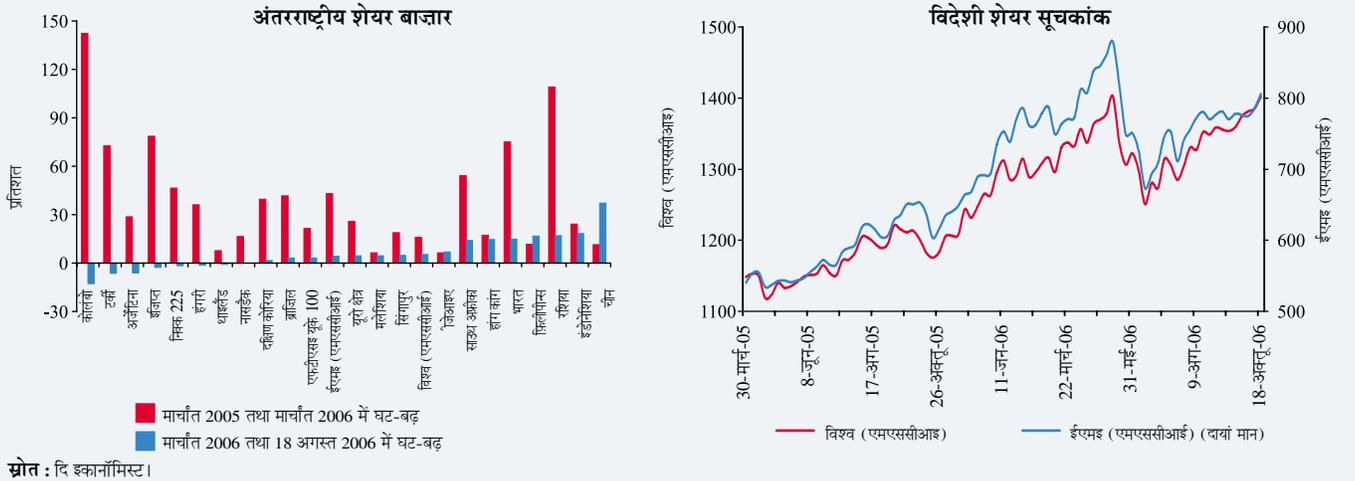
में थोड़ा पूरा कर लिया (चार्ट 32)। एमएससीआइ विश्व और एमएससीआइ उभरते बाजारों के सूचकांकों में 14 जून 2006 तथा उनके हमेशा ऊंचे बने रहने वाले 10 मई 2006 के बीच क्रमशः 10.8 प्रतिशत तथा 23.4 प्रतिशत की गिरावट हुई; तब से लेकर (18 अक्टूबर 2006 तक) इन सूचकांकों में क्रमशः 12.1 प्रतिशत तथा 19.7 प्रतिशत का सुधार हुआ है। सुदृढ़ कार्पोरेट परिणाम, यूरो क्षेत्र में अपेक्षा से अधिक विकास, बांड अर्जन में गिरावट तथा फेडरल रिज़र्व में ठहराव से वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही में इक्विटी बाजार को समर्थन मिला।

विदेशी मुद्रा बाजार में, 2006-07 की दूसरी तिमाही के दौरान पाउंड-स्टर्लिंग की तुलना में अमरीकी डॉलर में 1.9 प्रतिशत का मूल्यहास हुआ तथा यूरो की तुलना में काफी हद तक अपरिवर्तित रहा (चार्ट 33)। किंतु तिमाही के दौरान इसमें जापानी येन की तुलना में 2.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

घरेलू वित्तीय बाजार

भारतीय वित्तीय बाजार वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही के दौरान काफी हद तक नियंत्रित रहा। मांग मुद्रा दरें भी केवल सितंबर 2006 के पखवाड़े को छोड़कर सामान्यतया रिवर्स रेपो दर के निकट ही रही हैं। ओवर नाइट मुद्रा बाजार के संपाश्विक खंड में, जो मुद्रा बाजार का अग्रणी खंड होता है, ब्याज दरें जुलाई-अगस्त 2006 के दौरान रिवर्स रेपो दर और मांग दर से कम रही हैं। विदेशी मुद्रा बाजार में, भारतीय रुपये में दुतरफा घट-बढ़ हुई है। सरकारी प्रतिभूति बाजार में जुलाई 2006 के मध्य से आय में थोड़ी नरमी रही जो विदेशी बाजार की प्रवृत्ति को तथा गतिविधियों, जैसे, कच्चे तेल की कीमतों में तीव्र गिरावट को दर्शाती है। वर्ष 2006-07 की दूसरी छमाही के लिए जारी किया गया बाजार उधार कैलेंडर विशेष रूप से बाजार की प्रत्याशाओं के अनुरूप बनाया गया है। ऋण बाजार में, जमा और उधार दरें तिमाही के दौरान

चार्ट 32: अंतरराष्ट्रीय शेयर बाजार



स्रोत : दि इकॉनॉमिस्ट।

चार्ट 33: प्रति अमरीकी डॉलर बड़ी मुद्राओं की विनिमय दर



अधिक बनी रहें क्योंकि ऋण की मांग बहुत अधिक थी। स्टॉक बाजार ने अपना वह नुकसान पूरा कर लिया जो उसे मई-जून 2006 के विश्व में हुई अशांति में

उठाना पड़ा था। इक्विटी बाजार के प्राथमिक बाजार खंड में जुलाई-सितंबर 2006 के दौरान जुटाए गए संसाधन संतुलित थे (सारणी 34)।

सारणी 34: देशी वित्तीय बाजार-एक नजर में

माह	मांग मुद्रा		सरकारी प्रतिभूतियां		विदेशी मुद्रा				चलनिधि प्रबंध		ईक्विटी			
	औसत दैनिक कुल कारोबार (करोड़ रुपए)	औसत मांग दर* (प्रतिशत)	औसत सरकारी प्रतिभूतियों में कारोबार (करोड़ रुपए)+	औसत 10 वर्षीय आय @ (प्रतिशत)	औसत दैनिक अंतर बैंक कुल कारोबार (मिलियन अमरीकी डॉलर)	औसत विदेशी दर (प्रति अमरीकी डॉलर रुपए)	रिज़र्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा बिक्री (-)/ खरीद (+) (मिलियन अमरीकी डॉलर)	औसत वार्यदा प्रीमियम 3-माह (प्रतिशत)	बकाया औसत एमएसएस # (करोड़ रुपए)	औसत दैनिक रिवर्स रेपो (एलएएफ) बकाया (करोड़ रुपए)	औसत दैनिक बीएसई कुल कारोबार (करोड़ रुपए)	औसत दैनिक एन एस ई कुल कारोबार (करोड़ रुपए)	औसत बीएसई सूचकांक** (प्रतिशत)	औसत एस एण्ड पी सीएनएस निफ्टी**
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
2004-05	14,170	4.65	4,826	6.22	8,892	44.93	20,847 £	1.66	46,445	35,592	2,050	4,506	5741	1805
2005-06	17,979	5.60	3,643	7.12	12,738	44.27	8,143 £	1.60	58,792	10,986	3,248	6,256	8295	2518
अप्रैल	17,213	4.77	3,001	7.02	9,880	43.74	0	1.96	65,638	30,675	1,890	4,136	6379	1987
मई	15,269	4.99	3,805	7.11	10,083	43.49	0	1.57	68,539	22,754	1,971	3,946	6483	2002
जून	20,134	5.10	6,807	6.88	10,871	43.58	-104	1.40	70,651	13,916	2,543	4,843	6926	2134
जुलाई	20,046	5.02	3,698	7.13	11,003	43.54	2,473	1.56	70,758	10,754	3,095	6,150	7337	2237
अगस्त	16,158	5.02	4,239	7.04	11,749	43.62	1,552	0.69	71,346	34,832	3,452	6,624	7726	2358
सितंबर	16,292	5.05	5,207	7.04	11,040	43.92	0	0.62	67,617	30,815	3,871	6,923	8272	2512
अक्टूबर	17,164	5.12	2,815	7.14	13,087	44.82	0	0.69	68,602	18,608	2,955	6,040	8220	2487
नवंबर	22,620	5.79	3,314	7.10	11,228	45.73	0	0.67	67,041	3,268	2,635	5,480	8552	2575
दिसंबर	21,149	6.00	2,948	7.13	13,808	45.64	-6,541	1.51	52,040	1,452	3,516	6,814	9162	2773
जनवरी	17,911	6.83	3,094	7.15	16,713	44.40	0	2.60	40,219	-15,386	3,966	7,472	9540	2893
फरवरी	13,497	6.95	2,584	7.32	15,798	44.33	2,614	2.85	33,405	-13,532	3,688	7,125	10090	3019
मार्च	18,290	6.58	2,203	7.40	17,600	44.48	8,149	3.11	29,652	-6,319	5,398	9,518	10857	3236
2006-07														
अप्रैल	16,909	5.62	3,685	7.45	20,837	44.95	4,305	1.31	25,709	46,088	4,860	9,854	11742	3494
मई	18,074	5.54	3,550	7.58	20,174	45.41	504	0.87	26,457	59,505	4,355	9,155	11599	3437
जून	17,425	5.73	2,258	7.86	15,310	46.06	0	0.73	31,845	48,610	3,261	6,828	9935	2915
जुलाई	18,254	5.86	2,243	8.26	14,086 अ	46.46	0	0.83	36,936	48,027	2,605	5,652	10557	3092
अगस्त	21,294	6.06	5,786	8.09	15,630 अ	46.54	0	1.22	40,305	36,326	2,869	5,945	11305	3306
सितंबर	23,665	6.33	8,306	7.76	17,837 अ	46.12	-	1.31	40,018	25,862	3,411	6,873	12036	3492

* : औसत दैनिक भारित मांग मुद्रा उधार दरें।

@ : औसत दैनिक अंतिम दरें।

एमएसएस : बाजार स्थिरीकरण योजना

: औसत साप्ताहिक बकाया बाजार स्थिरीकरण योजना

£ : वित्तीय वर्ष के लिए संचयी।

टिप्पणी : स्तंभ 11 में (+) चलनिधि का अवशोषण एवं (-) भरण दर्शाता है।

+ : केंद्र सरकार की पिनाकित प्रतिभूतियों में एकमुश्त कुल कारोबार

** : औसत दैनिक अंतिम सूचकांक

बीएसई : द स्टॉक एक्सचेंज, मुंबई

अ : अनंतिम

एलएएफ : चलनिधि समायोजन सुविधा

एनएसई : भारतीय राष्ट्रीय शेयर बाजार लि.

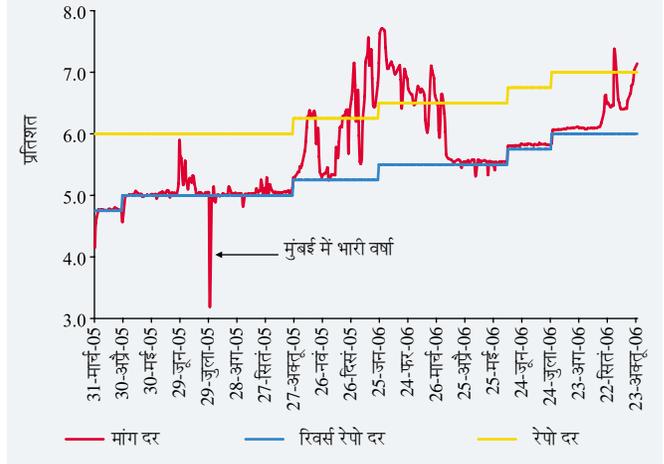
- : उपलब्ध नहीं।

मुद्रा बाज़ार

मुद्रा बाज़ार की स्थिति वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही में काफी हद तक सहज थी। मांग मुद्रा दरें जो 2005-06 की दूसरी छमाही में बढ़ गई थीं अप्रैल 2000 के प्रारंभ में उनमें थोड़ी कमी हुई और सितंबर 2006 के मध्य तक सामान्यतया रिवर्स रेपो दर के निकट बनी रहीं, चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) के हाल के बैंड (दर-विस्तार) से पता चलता है कि चलनिधि की स्थिति अच्छी थी। स्थिर रिवर्स रेपो दर में 25 जुलाई 2006 से 25 आधार अंक की वृद्धि से मांग दर में भी उतनी ही वृद्धि हुई (चार्ट 34)। सितंबर 2006 की दूसरी छमाही के दौरान मांग मुद्रा दर में वृद्धि हुई जिसका कारण चलनिधि का दबाव था जो अग्रिम कर आउटफ्लो और उच्च ऋण की मांग की स्थिति के दौरान त्यौहार के मौसम में मुद्रा की मांग बढ़ जाने से पैदा हुई थी। मांग दर सितंबर 2006 के अंतिम सप्ताह में लगभग 6.5 प्रतिशत के आसपास थी जो 29 सितंबर 2006 को बढ़कर 7.38 प्रतिशत हो गई किंतु 3 अक्टूबर 2006 को कम होकर 6.55 प्रतिशत पर आ गई। मांग दर अक्टूबर 2006 के मध्य में पुनः ऊपर उठना शुरू हुई और 23 अक्टूबर 2006 को 7.15 प्रतिशत पर पहुंच गई जो मार्च 2006 की समाप्ति की दर से 51 आधार अंक अधिक थी।

मुद्रा बाज़ार के संपार्श्विक खंड में ब्याज दर - बाज़ार रेपो (एलएएफ के अलावा) और संपार्श्विक उधार तथा ऋण दायित्व (सीबीएलओ) खंड - जुलाई-अगस्त 2006 के दौरान मांग दर से कम दर पर बने रहे। अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान सीबीएलओ तथा बाज़ार रेपो खंड में ब्याज की औसत दर क्रमशः 5.56 प्रतिशत एवं 5.60 प्रतिशत थी जबकि मांग मुद्रा बाज़ार में यह दर 5.86 प्रतिशत थी। संपार्श्विक बाज़ार का अब मुद्रा बाज़ार पर वर्चस्व है जिसका हिस्सा वर्ष 2006-07 में अब तक 70 प्रतिशत से अधिक रहा है (चार्ट 35 और सारणी 35)। सीबीएलओ बाज़ार में म्युचुअल

चार्ट 34 : मांग दर और रिवर्स रेपो दर

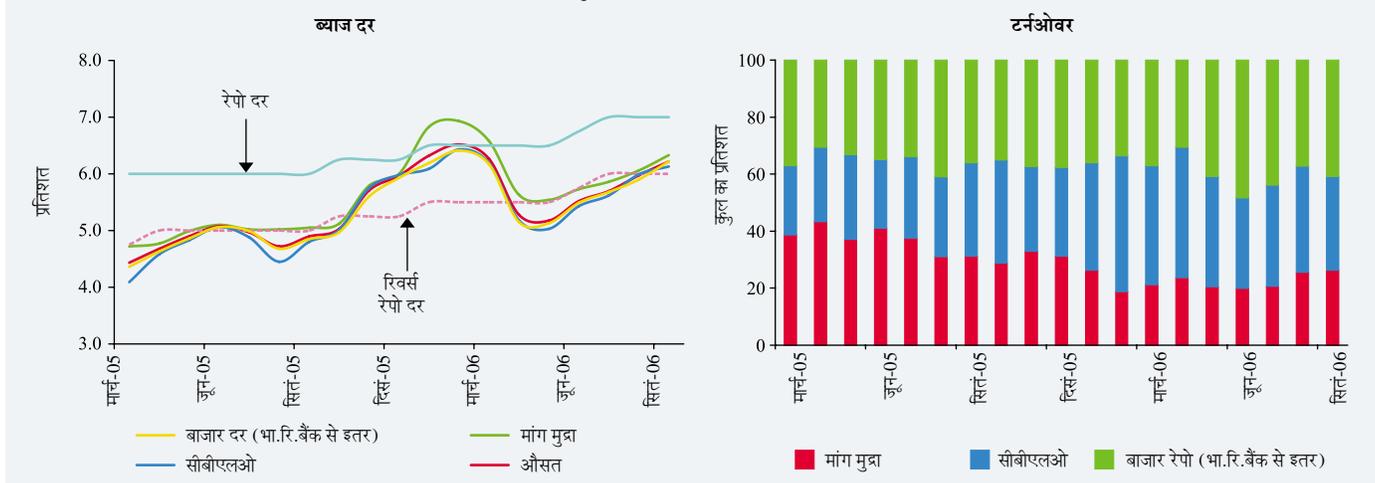


फंड, बीमा कंपनियों और वित्तीय संस्थाएं प्रमुख उधारदाता हैं तथा राष्ट्रीकृत बैंक प्रमुख उधारकर्ता रहे हैं। बाज़ार रेपो खंड में म्युचुअल फंड प्रमुख रूप से धन उपलब्ध कराता है जब कि विदेशी बैंक, निजी बैंक एवं प्राथमिक व्यापारी इसके प्रमुख उधारकर्ता हैं।

जमा प्रमाण पत्र

वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही के दौरान जमा प्रमाण पत्रों की अत्यधिक मांग थी क्योंकि इससे बैंक लगातार ऋण की मांग को पूरा करने के लिए जमाराशियां जुटाने के उनके प्रयास की सहायता मिल रही थी (चार्ट 36)। जून 2006 के अंत तक 56,390 करोड़ रुपए जारी कर्ता बैंक की सकल जमाराशि का 4.3 प्रतिशत के जमा प्रमाणपत्र बकाया थे जो 15 सितंबर 2006 को बढ़कर 63,864 करोड़ रुपए हो गए। '3 महीने से 179 दिवसीय'

चार्ट 35: मुद्रा बाज़ार - ब्याज दर तथा टर्नओवर



सारणी 35: मुद्रा बाज़ार घटक में गतिविधियां

(करोड़ रुपए)

माह	औसत दैनिक टर्नओवर #			वाणिज्यिक पेपर			जमा प्रमाणपत्र बकाया राशि
	मांग मुद्रा बाज़ार	रेपो बाज़ार (एलएफ के बाहर)	संपार्श्विकृत उधार लेने और देने संबंधी दायित्व	मीयादी मुद्रा बाज़ार	बकाया राशि	जारी राशि	
1	2	3	4	5	6	7	8
2004-05 ^	14,170	17,135	6,697	526	11,723	1,090	6,052
2005-06 ^	17,979	21,183	20,039	833	17,285	3,140	27,298
अप्रैल	17,213	12,174	10,370	661	15,598	3,549	16,602
मई	15,269	13,688	12,233	545	17,182	3,824	17,689
जून	20,134	17,163	11,792	534	17,797	2,925	19,270
जुलाई	20,046	18,103	15,292	717	18,607	3,360	20,768
अगस्त	16,158	21,325	14,544	754	19,508	4,110	23,568
सितंबर	16,292	18,872	17,143	1,116	19,725	2,519	27,641
अक्टूबर	17,164	20,980	21,763	734	18,726	2,892	29,193
नवंबर	22,620	25,660	20,496	917	18,013	2,483	27,457
दिसंबर	21,149	25,574	21,265	775	17,234	4,104	32,806
जनवरी	17,911	24,596	25,634	1,089	16,431	1,937	34,521
फरवरी	13,497	24,096	34,162	813	15,876	3,160	34,487
मार्च	18,290	31,964	35,775	1,338	12,718	2,813	43,568
2006-07							
अप्रैल	16,909	21,914	32,657	894	16,550	6,065	44,059
मई	18,074	36,107	34,293	945	17,067	4,701	50,228
जून	17,425	42,250	27,617	1,256	19,650	4,981	56,390
जुलाई	18,254	38,684	31,340	864	21,110	5,812	59,167
अगस्त	21,294	31,056	31,178	1,020	22,854	6,460	65,621
सितंबर	23,665	36,740	29,541	1,135	24,419	5,220	63,864 @

: उधार लेने और उधार देने दोनों की क्रियाओं के लिए मांग मुद्रा और सीबीएलओ के मामले में टर्न ओवर एकल चरण परिमाण का दो गुना है और रेपो के लिए दो चरणों में उधार लेने और देने की क्रियाओं के लिए बाजार रेपो (एलएफ से बाहर) के मामले में चार गुना है।

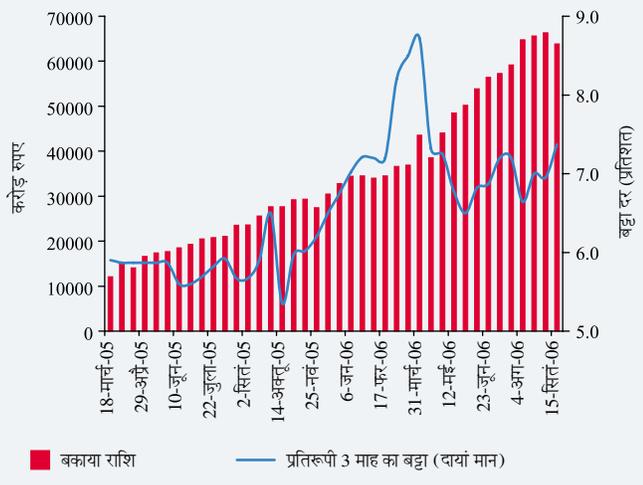
^ : आंकड़े मासिक औसत हैं। @ : 15 सितंबर 2006 को

सीडी के लिए खास भुनाई दर 15 सितंबर 2006 को 7.37 प्रतिशत थी जबकि इसकी तुलना में जून 2006 के अंत में यह दर 6.87 प्रतिशत थी। कुछ निजी और सरकारी क्षेत्र के बैंक संसाधन-अंतराल को पूरा करने के लिए सीडी माध्यम का अधिक से अधिक इस्तेमाल कर रहे हैं।

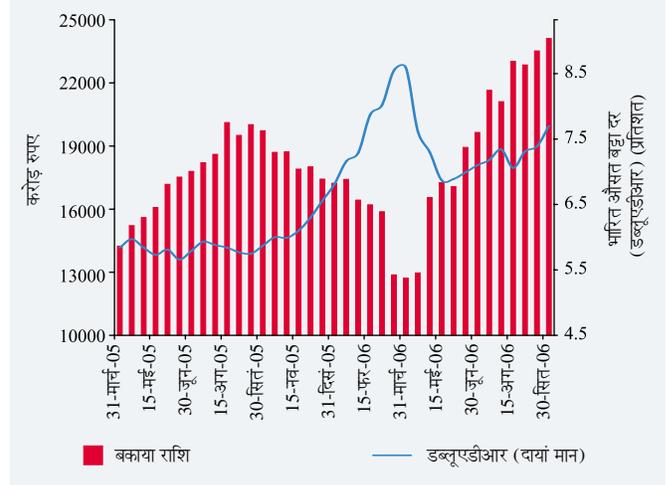
वाणिज्य पत्र

जारी किए गए वाणिज्यपत्रों की कुल बकाया राशि 30 जून 2006 को 19,650 करोड़ रुपए थी जो 30 सितंबर 2006 को बढ़कर 24,419 करोड़ रुपए हो गई (चार्ट 37)। वाणिज्य पत्र की भारित औसत भुनाई दर (डब्ल्यू

चार्ट 36: जमा प्रमाणपत्र



चार्ट 37: वाणिज्यिक पत्र



सारणी 36: वाणिज्यिक पत्र - प्रमुख

(करोड़ रुपए)

जारीकर्ता का प्रकार	के अंत में			
	मार्च 2005	मार्च 2006	जून 2006	सितंबर 2006
1	2	3	4	5
पट्टेदारी तथा वित्तपोषण	8,479 (59.6)	9,400 (73.9)	13,460 (68.5)	15,792 (64.6)
विनिर्माण	2,881 (20.2)	1,982 (15.6)	4,155 (21.1)	4,847 (19.9)
वित्तीय संस्थान	2,875 (20.2)	1,336 (10.5)	2,035 (10.4)	3,780 (15.5)
कुल	14,235 (100.0)	12,718 (100.0)	19,650 (100.0)	24,419 (100.0)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल का प्रतिशत अंश हैं।

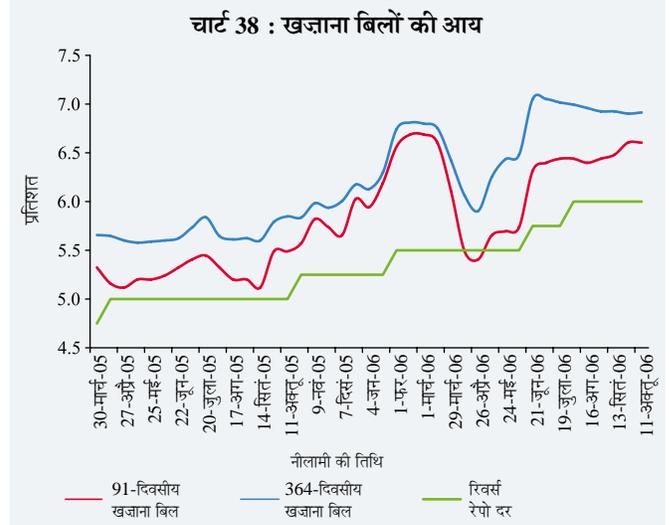
ए डी आर) 30 जून 2006 की 7.10 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2006 के अंत में 7.70 प्रतिशत हो गई जो मुद्रा बाजार दर में वृद्धि के अनुरूप थी। तिमाही के दौरान जारी किए गए वाणिज्य पत्रों पर आय '3-6 महीने' की अवधि हेतु 7.15-8.00 प्रतिशत के बीच तथा '6 महीने से 1 वर्ष' की अवधि हेतु 7.55-8.60 प्रतिशत के बीच थी।

पट्टा और वित्त कंपनियों ने सबसे अधिक वाणिज्य पत्र जारी किए, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन कंपनियों द्वारा जनता से जमा राशियां जुटाने की व्यवस्था समाप्त कर दी गई है (सारणी 36)। वित्तीय संस्थाओं और विनिर्माण कंपनियों ने भी दूसरी तिमाही के दौरान वाणिज्य पत्र के अधिक निर्गम जारी किए हैं।

खजाना बिल

91 दिवसीय खजाना बिलों पर प्राथमिक बाजार आय जून 2006 के अंत के स्तर से बढ़ी है जबकि इसी तिमाही में 364 दिवसीय खजाना बिलों पर आय में थोड़ी कमी हुई है (चार्ट 38)। फलस्वरूप, 364 दिवसीय तथा 91 दिवसीय खजाना बिलों के बीच आय-स्प्रेड जो जून 2006 में बढ़कर 63 आधार अंक हो गया था वह अक्टूबर 2006 (18 अक्टूबर तक) में घटकर 29 आधार अंक हो गया (सारणी 37)। वर्ष 2006-07 के दौरान केवल 20 सितंबर 2006 को

चार्ट 38 : खजाना बिलों की आय



सारणी 37 : प्राथमिक बाजार में खजाना बिल

माह	अधिसूचित राशि (करोड़ रु.)	न्यूनतम निर्दिष्ट मूल्य पर औसत अंतर्निहित आय (प्रतिशत)			औसत बोली कवर अनुपात		
		91-दिवसीय	182-दिवसीय	364-दिवसीय	91-दिवसीय	182-दिवसीय	364-दिवसीय
1	2	3	4	5	6	7	8
2004-05 [^]	1,38,500 @	4.91	-	5.16	2.43	-	2.52
2005-06 [^]	1,55,500 @	5.68	5.82	5.96	2.64	2.65	2.45
अप्रैल	19,000	5.17	5.36	5.62	4.03	4.48	2.54
मई	15,000	5.19	5.35	5.58	3.30	3.37	2.29
जून	18,500	5.29	5.37	5.61	1.54	2.42	1.81
जुलाई	11,500	5.46	5.67	5.81	1.21	1.79	1.68
अगस्त	21,000	5.23	5.42	5.63	3.07	2.68	2.54
सितंबर	23,000	5.24	5.37	5.70	1.52	1.45	1.61
अक्टूबर	15,000	5.50	5.71	5.84	1.69	1.53	3.44
नवंबर	11,000	5.76	5.85	5.96	2.12	1.92	2.30
दिसंबर	5,000	5.89	6.00	6.09	3.07	2.97	2.36
जनवरी	5,000	6.25	6.22	6.21	2.86	2.83	2.72
फरवरी	5,000	6.63	6.74	6.78	3.04	2.07	2.71
मार्च	6,500	6.51	6.66	6.66	4.17	3.43	3.36
2006-07							
अप्रैल	5,000	5.52	5.87	5.98	5.57	4.96	2.02
मई	18,500	5.70	6.07	6.34	1.88	1.84	1.69
जून	15,000	6.14	6.64	6.77	1.63	1.35	2.11
जुलाई	15,000	6.42	6.75	7.03	1.82	1.55	3.12
अगस्त	19,000	6.41	6.70	6.96	2.03	2.71	3.48
सितंबर	15,000	6.51	6.76	6.91	1.35	1.80	2.92
अक्टूबर*	11,000	6.62	6.84	6.91	1.33	1.20	2.34

[^] : आकड़े मासिक औसत हैं।

@ : वित्तीय वर्ष के लिए कुल।

* : 18 अक्टूबर 2006 तक

टिप्पणी : अप्रैल 2005 से 182-दिवसीय खजाना बिल पुनः शुरू किया गया।

91 दिवसीय खजाना बिल की की गई नीलामी के निर्गम को छोड़कर अब तक के सारे निर्गम बाजार में पूरी तरह से खप गए हैं।

विदेशी मुद्रा बाजार

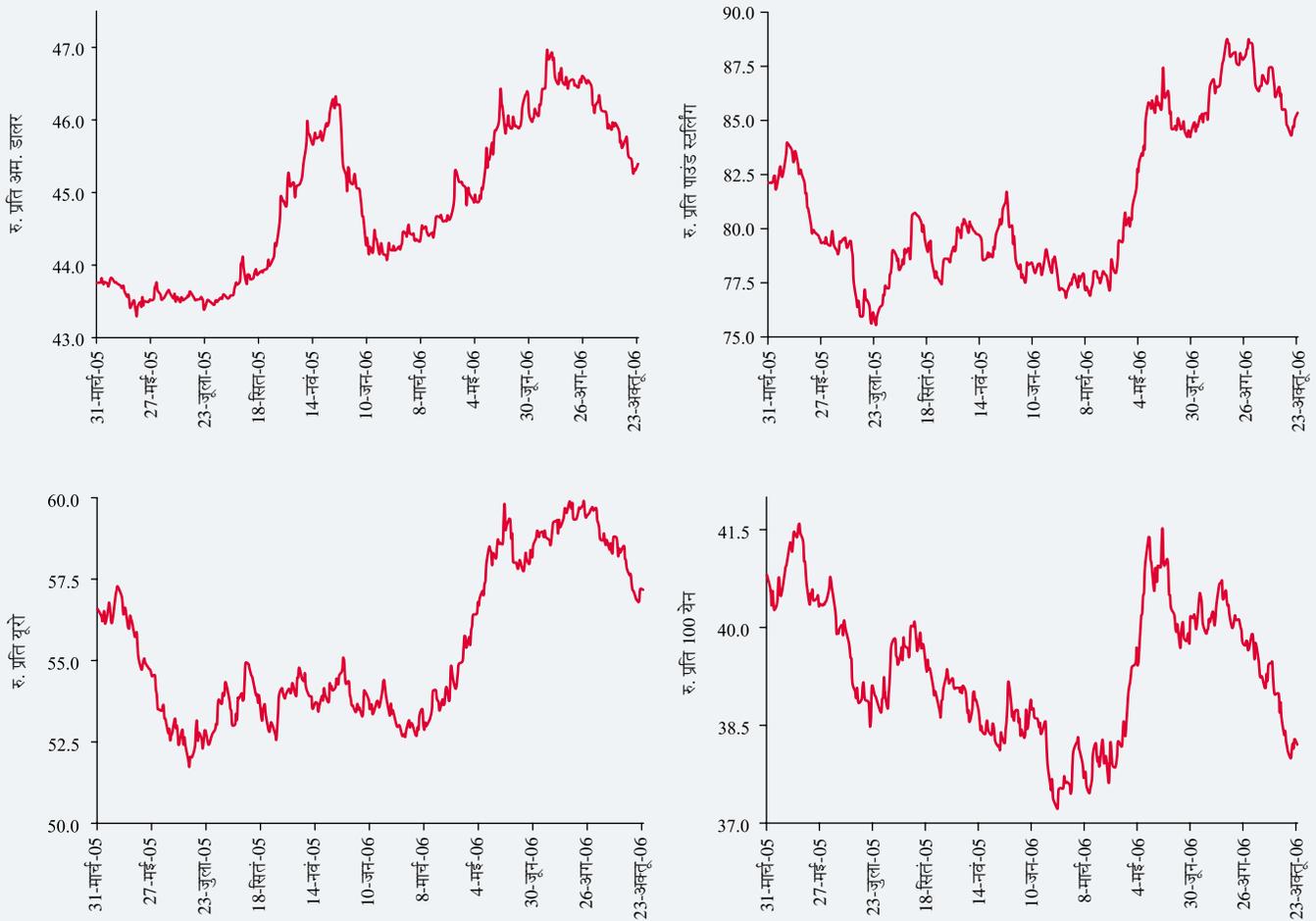
विदेशी मुद्रा बाजार में, सितंबर 2006 को समाप्त तिमाही के दौरान भारतीय रुपया में दुतरफा घट-बढ़ हुई है। जून 2006 के दौरान रुपया पर दबाव बढ़ गया था क्योंकि कच्चे तेल की कीमतें बढ़ गई थीं और मध्य पूर्व क्षेत्र में भू-राजनैतिक जोखिम पैदा हो गए थे। किंतु, जुलाई 2006 के अंतिम सप्ताह से रुपया का मूल्य बढ़ा क्योंकि विदेशी संस्थागत निवेश का इनफ्लो था और तेल की कीमतें कम हुई थीं। वर्ष 2006-07 के दौरान अब तक (23 अक्टूबर 2006 तक) रुपए का मूल्य प्रति अमरीकी डॉलर थी अर्थात् 31 मार्च

2006 के स्तर से 1.7 प्रतिशत का मूल्यहास। इसी अवधि में, रुपए, में पाउंड स्टर्लिंग की तुलना में 8.9 प्रतिशत, यूरो की तुलना में 5.2 प्रतिशत और जापानी येन की तुलना में 0.5 प्रतिशत का मूल्यहास हुआ।

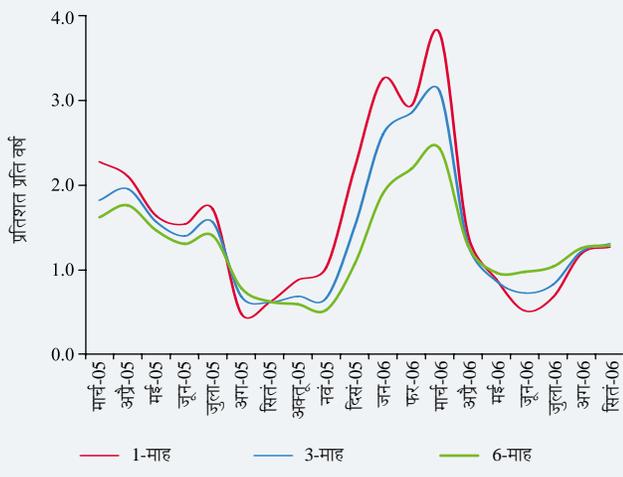
2006-07 की दूसरी तिमाही में वायदा प्रीमियम में वृद्धि हुई जो घरेलू स्तर पर ब्याज दरों में वृद्धि होना दर्शाती है (चार्ट 40)।

2006-07 की दूसरी तिमाही में विदेशी मुद्रा बाजार के अंतर-बैंक तथा व्यापारिक बैंक खंडों का टर्नओवर वर्ष 2005-06 की इसी अवधि के टर्न ओवर से अधिक था। जहां अंतर-बैंक टर्न ओवर 2005-06 की दूसरी तिमाही के 233 बिलियन अमरीकी डॉलर (मासिक औसत) से बढ़कर (2006-07) की दूसरी तिमाही में 338 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, वही व्यापारिक खंड का टर्न ओवर 94 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 131 बिलियन

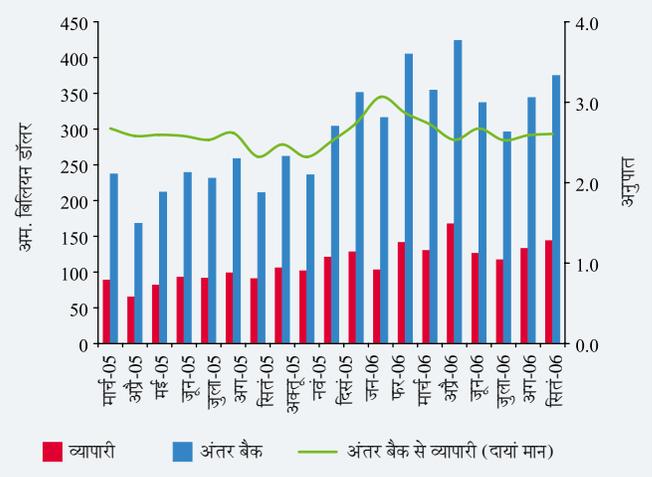
चार्ट 39 : बड़ी मुद्राओं के साथ रुपए में उतार-चढ़ाव



चार्ट 40 : वायदा प्रीमिया में उतार - चढ़ाव



चार्ट 41 : विदेशी मुद्रा बाज़ार में टर्नओवर



अमरीकी डॉलर हो गया (चार्ट 41)। 2006-07 की दूसरी तिमाही में व्यापारिक खंड के टर्नओवर की तुलना में अंतर-बैंक टर्नओवर का प्रतिशत 2.6 था जो एक वर्ष पूर्व 2.5 प्रतिशत के लगभग समान ही था।

ऋण बाज़ार

सरकारी क्षेत्र के बैंकों ने एक वर्ष से अधिक अवधि की मीयादी जमाराशियों पर अपनी ब्याज दरें जून 2006 के 5.75-7.25 प्रतिशत से बढ़ाकर अक्टूबर

2006 के मध्य तक 6.25-8.00 प्रतिशत के बीच कर दी; और इसी अवधि में एक वर्ष तक की परिपक्वता अवधि की जमाराशियों पर ब्याज दरें 2.75-6.50 प्रतिशत से बढ़ाकर 2.75-7.00 प्रतिशत कर दी हैं (सारणी 38 चार्ट 42)। जहां तक विदेशी बैंकों तथा निजी क्षेत्र के बैंकों का संबंध है, उन्होंने विभिन्न परिपक्वता अवधि की मीयादी जमाराशियों पर अधिकतम दरें 25-165 आधार अंक तक बढ़ा दी हैं जबकि प्रस्तावित न्यूनतम दर में 25-150 आधार अंकों की कमी की है। उधार देने हेतु, सरकारी क्षेत्र के बैंक तथा निजी

सारणी 38 : जमा तथा उधार दरों में घट-बढ़

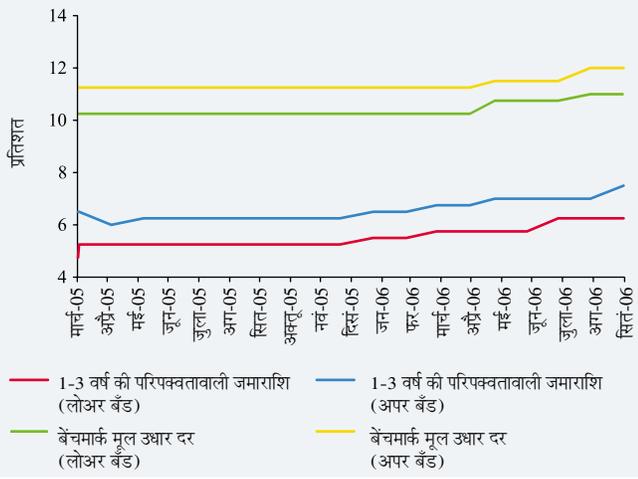
(प्रतिशत)

ब्याज दर	मार्च 2005	मार्च 2006	जून 2006	जुलाई 2006	अगस्त 2006	सितंबर 2006	अक्टूबर@ 2006
1	2	3	4	5	6	7	8
1. देशी जमा दर							
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक							
1 वर्ष तक	2.75-6.00	2.25-6.50	2.75-6.50	2.75-6.50	2.75-6.50	2.75-7.00	2.75-7.00
1 वर्ष से अधिक और 3 वर्ष तक	4.75-6.50	5.75-6.75	5.75-7.00	6.25-7.00	6.25-7.00	6.25-7.50	6.25-7.50
3 वर्ष से अधिक	5.25-7.00	6.00-7.25	6.00-7.25	6.25-7.25	6.25-7.50	6.50-8.00	6.50-8.00
निजी क्षेत्र के बैंक							
1 वर्ष तक	3.00-6.25	3.50-7.25	3.50-6.75	3.00-7.00	3.00-7.00	3.00-7.25	3.00-8.00
1 वर्ष से अधिक 1 वर्ष से अधिक	5.25-7.25	5.50-7.75	6.50-7.75	5.50-8.00	5.50-8.00	6.75-8.25	6.75-8.25
3 वर्ष से अधिक	5.75-7.00	6.00-7.75	6.50-8.25	6.00-8.25	6.00-8.25	6.75-8.50	6.75-8.50
विदेशी बैंक							
1 वर्ष तक	3.00-6.25	3.00-6.15	3.25-6.50	3.00-6.75	3.00-6.75	3.00-7.50	3.00-7.50
1 वर्ष से अधिक 1 वर्ष से अधिक	3.50-6.50	4.00-6.50	5.00-6.50	4.00-7.00	4.00-7.00	3.50-8.15	3.50-8.15
3 वर्ष से अधिक	3.50-7.00	5.50-6.50	5.50-6.75	4.00-7.00	4.00-7.00	4.00-8.25	4.00-8.25
2. बैंचमार्क मूल उधार दर							
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	10.25-11.25	10.25-11.25	10.75-11.50	10.75-11.50	11.00-12.00	11.00-12.00	11.00-12.00
निजी क्षेत्र के बैंक	11.00-13.50	11.00-14.00	11.00-14.50	11.00-15.00	11.50-15.00	11.50-15.00	11.50-15.00
विदेशी बैंक	10.00-14.50	10.00-14.50	10.00-14.50	10.00-14.50	10.00-14.50	10.00-14.50	10.00-14.50
3. वास्तविक उधार दर*							
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	2.75-16.00	4.00-16.50	4.00-16.50	-	-	-	-
निजी क्षेत्र के बैंक	3.15-22.00	3.15-20.50	3.15-26.00	-	-	-	-
विदेशी बैंक	3.55-23.50	4.75-26.00	4.75-25.00	-	-	-	-

* : निर्यातित मांग और 2 लाख रुपए से अधिक के सावधि ऋणों पर दोनों मामलों में अधिकतम 5 प्रतिशत की उधार दर से अन्य ब्याज दर ।

@ : 13 अक्टूबर 2006 को ।

चार्ट 42: जमा तथा उधार दर - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

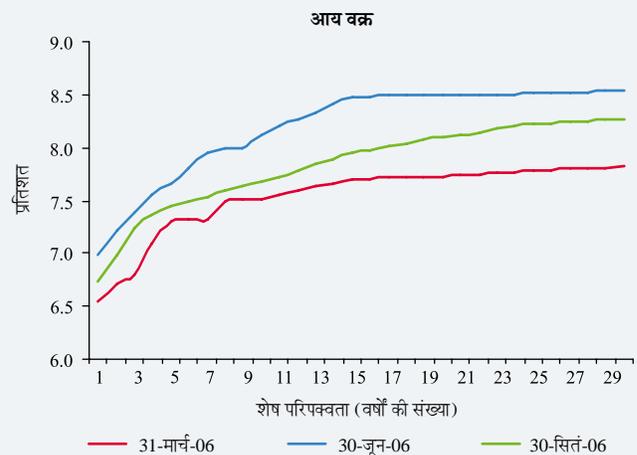
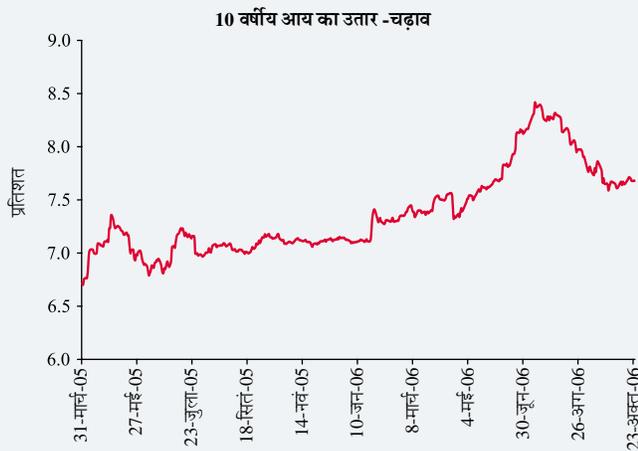


क्षेत्र के बैंकों ने अपनी बेंचमार्क प्राथमिक उधार दरों (बीपीएलआर) को बढ़ा दिया है जबकि इस अवधि के दौरान विदेशी बैंकों की बीपीएलआर रेंज अपरिवर्तित रही है। सरकारी क्षेत्र के बैंकों की बीपीएलआर जून 2006 के अंत में 10.75-11.50 प्रतिशत के बीच थी जो अक्टूबर 2006 के मध्य तक बढ़कर 11.00-12.00 प्रतिशत के बीच हो गई। 11-12 प्रतिशत तक की बीपीएलआर वाले सरकारी क्षेत्र के बैंकों की संख्या जून 2006 के अंत में 21 थी जो अक्टूबर 2006 के मध्य तक बढ़कर 26 हो गई। निजी क्षेत्र के बैंकों की बीपीएलआर जून 2006 के अंत में 11.00-14.50 प्रतिशत थी जो अक्टूबर 2006 के मध्य तक बढ़कर 11.50-15.00 प्रतिशत हो गई। 13-15 प्रतिशत की बीपीएलआर वाले निजी बैंकों की संख्या जून 2006 में थी जो अक्टूबर 2006 के मध्य तक बढ़कर 5 हो गई जबकि 11-12 प्रतिशत रेंज वाले बैंकों की संख्या 16 से घटकर 10 रह गई।

सरकारी प्रतिभूति बाज़ार

2006-07 की दूसरी तिमाही में सरकारी प्रतिभूति बाज़ार में आय की स्थिति सहज हुई, जिसने पहली तिमाही की कठोर प्रवृत्ति को उलट दिया। अप्रैल 2006 के मध्य में थोड़ी गिरावट आने के बाद जुलाई 2006 के मध्य तक आय में वृद्धि का रुझान पैदा हो गया जिसके कई कारण थे, जैसे, अमरीका तथा अन्य अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक नीति का अधिक कठोर होना, कच्चे तेल की ऊंची तथा संवेदी कीमतें, घरेलू स्तर पर ईंधन की कीमतों में वृद्धि की संभावना, तेल बांडों के निर्गमों की प्रत्याशा, अधिक सरकारी खर्च, स्टॉक बाज़ार में अस्थिरता, प्राथमिक व्यापारियों की 11 जुलाई 2006 को की गई नीलामी की घटना तथा 9 जून 2006 से रिवर्स रेपो तथा रेपो दर में 25 आधार अंक की वृद्धि। इन कारणों को देखते हुए, 10 वर्षीय आय 10 जुलाई 2006 को 8.41 प्रतिशत तक पहुंच गई जो मार्च 2006 के अंत की स्थिति से 89 आधार अंक बढ़ी थी। जुलाई 2006 के मध्य से आय में कुछ कमी हुई, विशेष रूप से अगस्त से कमी हुई। अमरीका में सरकारी बांड आय में कमी आना, फेडरल रिज़र्व का जून 2006 के अंत से अपनी सभी बैठकों में फेड निधि दर को अपरिवर्तित रखने का निर्णय लिया जाना तथा कच्चे तेल की कीमतें कम होने से घरेलू स्तर पर आय में कमी हुई है। केंद्र सरकार के उधार लेने के कैलेंडर की घोषणा बाज़ार संभावनाओं के अनुसार की गई है। कुल मिलाकर, 10 वर्षीय आय वर्ष 2006-07 के दौरान अब तक 16 आधार अंक बढ़ी है : 31 मार्च 2006 के 7.52 प्रतिशत से बढ़कर 23 अक्टूबर 2006 को 7.68 प्रतिशत (चार्ट 43)। 1-10 वर्षीय आय का स्प्रेड जून 2006 के अंत में 113 आधार अंक से कम होकर सितंबर 2006 के अंत में 94 आधार अंक हो गया (जिसकी तुलना मार्च 2006 के अंत के 98 आधार अंक से की जा सकती है)। तथापि, 10 वर्षीय और 30 वर्षीय आय के बीच स्प्रेड मार्च 2006 के अंत के 30 आधार अंक से बढ़कर 61 आधार अंक हो गया।

चार्ट 43 : केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों पर आय



सरकारी प्रतिभूतियों का टर्नओवर अप्रैल-जुलाई 2006 के दौरान काफी हद तक धीमा रहा क्योंकि बैंकों ने आय में मंदी का वातावरण होने के कारण प्रतिभूतियों का व्यापार करने के बजाय उसे धारित रखना बेहतर समझा (चार्ट 44)। किंतु, टर्नओवर अगस्त और सितंबर 2006 में तेजी से बढ़ा जो जून 2005 के बाद से सबसे अधिक था क्योंकि आय की प्रवृत्ति अधोमुखी थी।

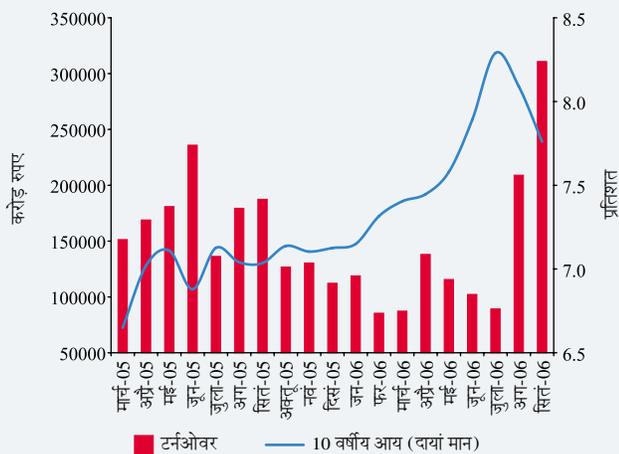
5 वर्षीय एएए-रेटिंग वाले कंपनी बांडों पर आय वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही के दौरान कमोबेश अपरिवर्तित रही, यद्यपि सरकारी प्रतिभूतियों पर आय में थोड़ी बेहतर स्थिति दिखाई दी थी। 5 वर्षीय सरकारी प्रतिभूतियों का आय स्प्रेड सितंबर 2006 के अंत में 91 आधार अंक था जो जून 2006 के अंत के 74 आधार अंक से अधिक था, किंतु यह मार्च 2006 के अंत के ठीक समान (91 आधार अंक) थी (चार्ट 45)।

इक्विटी बाज़ार

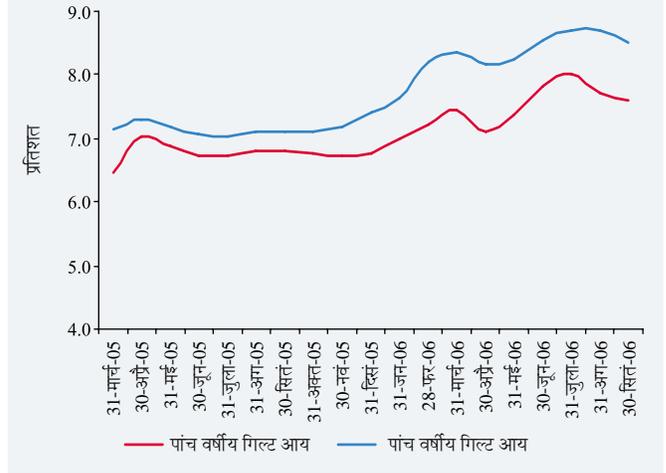
प्राथमिक बाज़ार

सार्वजनिक निर्गम खंड के माध्यम से अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान जुटाए गए संसाधन वर्ष 2005 की इसी अवधि से 51.6 प्रतिशत अधिक थे, हालांकि निर्गमों की संख्या 55 से घटकर 50 ही थी (सारणी 39)। यद्यपि, अधिकांश राशि अप्रैल-मई 2006 के दौरान जुटाई गई है (12,770 करोड़ रुपए में से 10,390 करोड़ रुपए)। मई-जून 2006 के दौरान स्टॉक बाज़ार की अस्थिरता के कारण बाद के महीनों में जुटाई गई राशियां कम थीं। सार्वजनिक निर्गमों की औसत मात्रा अप्रैल-सितंबर 2005 के 153 करोड़ रुपए से बढ़कर अप्रैल-सितंबर 2006 में 255 करोड़ रुपए हो गई। अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान सभी सार्वजनिक निर्गम गैर सरकारी सार्वजनिक लिमि. कंपनियों (निजी क्षेत्र) के इक्विटी के रूप में थे। अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान जारी 50 निर्गमों में से 27 निर्गम प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (आइपीओ) थे, जिनसे

चार्ट 44: सरकारी प्रतिभूतियों का टर्नओवर एवं आय



चार्ट 45: आय अंतर



90.0 प्रतिशत संसाधन जुटाए गए जबकि वर्ष 2005 की इसी अवधि में 55 में से 26 निर्गम आइपीओ थे (जिनसे 79.6 प्रतिशत संसाधन जुटाए गए)।

निजी खरीद (प्राइवेट प्लेसमेंट) के माध्यम से अप्रैल-जून 2006 के दौरान संसाधन जुटाने में 19.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि इसकी तुलना में अप्रैल-जून 2005 के दौरान 79.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी (सारणी 39)। अप्रैल-जून 2006 के दौरान जुटाए गए कुल संसाधनों में सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं का कुल हिस्सा 43.2 प्रतिशत था जो पिछले वर्ष (42.04 प्रतिशत) की इसी अवधि से थोड़ा सा अधिक था। वित्तीय बिचौलियों (सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्र) ने अप्रैल-जून 2006 के दौरान अधिकांश संसाधन (कुल जुटाए गए संसाधनों का 68.1 प्रतिशत) जुटाए हैं (अप्रैल-जून 2005 में 57.5 प्रतिशत)।

अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान भारतीय कॉर्पोरेट द्वारा यूरो निर्गम - अमरीकन डिपाजिटरी रसीद (एडीआर), ग्लोबल डिपाजिटरी रसीद (जीडीआर) तथा विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांडों के माध्यम से दुगुने से भी अधिक 7,917 करोड़ रुपए के संसाधन जुटाए क्योंकि कॉर्पोरेट ने अपनी निवेश गतिविधियों हेतु निधि जुटाने के लिए द्वितीयक बाज़ार की तेजी का फायदा उठाया (सारणी 39)।

म्युचुअल फंडों द्वारा अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान जुटाई गई कुल निधि में 63.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो 60,048 करोड़ रुपए थी (सारणी 40)। अधिकांश इनफ्लो दोनों योजनाओं - आय / ऋण-उन्मुख योजना तथा विकास / इक्विटी-उन्मुख योजना, से हुए हैं।

द्वितीयक बाज़ार

घरेलू स्टॉक बाज़ार में 2006-07 की दूसरी तिमाही में लाभ की स्थिति रही जिससे मई-जून 2006 की गिरावट से होने वाले नुकसान की काफी हद तक भरपाई हो गई है (चार्ट 46)। 11 मई, 2006 से स्टॉक बाज़ार में सुधार आया शुरू हो गया जो विश्व विकास की धीमी गति, विश्व स्तर पर बढ़ती महंगाई तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊंचे ब्याज दरों की चिंता से उत्पन्न बढ़ते

सारणी 39 : प्राथमिक बाज़ार से संसाधन संग्रहण

(राशि करोड़ रुपए)

मद	निर्गमों की संख्या	राशि	निर्गमों की संख्या	राशि
1	2	3	4	5
	2005-06 (अप्रैल-सितंबर)		2006-07 (अप्रैल-सितंबर) अ	
क. विवरणिका और अधिकार पत्र निर्गम*				
1. निजी क्षेत्र (क+ख)	52	5,903	50	12,770
क) वित्तीय	5	1,881	3	261
ख) वित्तेतर	47	4,022	47	12,509
2. सार्वजनिक क्षेत्र (क+ख+ग)	3	2,520	-	-
क) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम	-	-	-	-
ख) सरकारी कंपनियां	-	-	-	-
ग) बैंक / वित्तीय संस्थाएं	3	2,520	-	-
3. कुल (1+2)	55	8,423	50	12,770
जिनमें से:				
(i) ईक्विटी	54	8,305	50	12,770
(ii) ऋण	1	118	-	-
	2005-06 (अप्रैल -जून) अ		2006-07 (अप्रैल -जून) अ	
ख. निजी फ्लेसमेंट				
1. निजी क्षेत्र	241	12,171	301	14,211
क) वित्तीय	85	7,064	105	7,069
ख) गैर वित्तीय	156	5,107	196	7,142
2. सार्वजनिक क्षेत्र	40	8,806	16	10,826
क) वित्तीय	30	4,996	15	9,991
ख) गैर वित्तीय	10	3,810	1	835
3. कुल (1+2)	281	20,977	317	25,037
जापन:				
यूरो निर्गम \$	17	3,828	29	7,917

अ: अनंतिम

*: बिक्री प्रस्ताव छोड़कर

-: शून्य / नगण्य

\$: आंकड़े अप्रैल-सितंबर से संबंधित हैं।

जोखिमों के माहौल में विश्व-प्रवृत्ति के अनुरूप था। बम्बई स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक 14 जून 2006 को 8929 अंक पर पहुंच गया जो 10 मई 2006 के सर्वाधिक 12612 अंक से 29.2 प्रतिशत कम था। स्टॉक बाज़ार की स्थिति में उसके बाद सुधार आया, जिसकी वजह विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा की गई नई खरीद, प्रथम तिमाही में कार्पोरेट के तीव्रतर परिणाम, मानसून में

संतोषजनक प्रगति, अंतरराष्ट्रीय इक्विटी बाज़ार में ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति तथा विश्व स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में कमी होना रहा है। बंबई स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक 16 अक्टूबर 2006 को 12928 अंक के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया। बंबई स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक 23 अक्टूबर 2006 को 12623 अंक पर बंद हुआ जो उसके मार्च 2006 अंत के स्तर से 11.9 प्रतिशत अधिक था।

सारणी 40: पारस्परिक निधियों द्वारा संसाधन जुटाना

(करोड़ रुपए)

म्यूचुअल फंड	अप्रैल-मार्च 2005-06		अप्रैल-सितंबर			
	निवल जुटाना @	निवल आस्तियां #	2005-06		2006-07	
			निवल जुटाना @	निवल आस्तियां *	निवल जुटाना @	निवल आस्तियां *
1	2	3	4	5	6	7
निजी क्षेत्र	42,977	1,81,515	30,945	1,59,683	46,311	2,28,254
सार्वजनिक क्षेत्र	6,379	20,829	4,501	17,016	7,259	28,197
यूटी आई	3,424	29,519	1,377	24,969	6,478	34,755
कुल	52,780	2,31,863	36,823	2,01,668	60,048	2,91,206

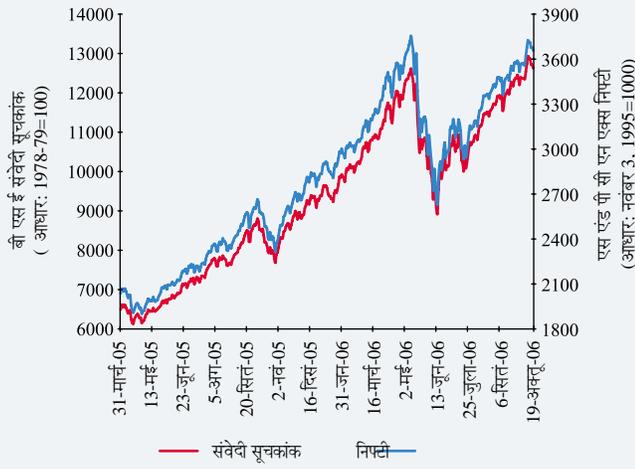
@: निवल शोधन

#: मार्च के अंत में

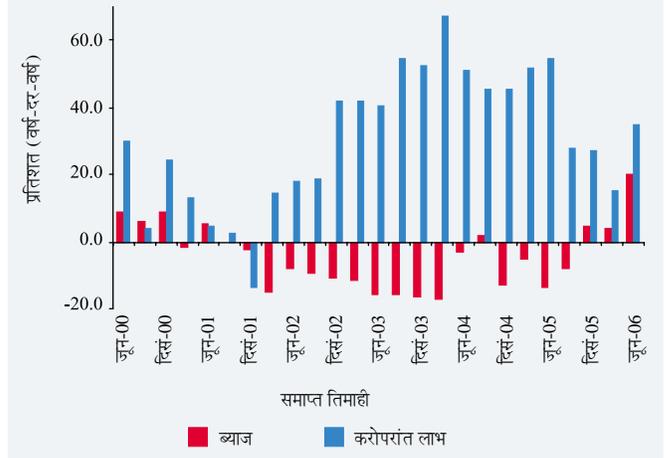
*: सितंबर के अंत में

स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड.

चार्ट 46 : भारतीय शेयर बाजार



चार्ट 47 : कार्पोरेट निष्पादन - वृद्धि दर



कार्पोरेट जगत के कर के बाद के लाभ में वर्ष 2005-06 की लगातार तीन तिमाहियों में थोड़ी गिरावट के उपरांत 2006-07 की पहली तिमाही में काफी सुधार हुआ है। बिक्री की तुलना में शुद्ध लाभ के अनुपात में भी जून 2006 को समाप्त तिमाही के दौरान 10.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो पिछली तिमाही के अनुपात से अधिक थी (सारणी 41 और चार्ट 47)।

मई 2006 में काफी मात्रा में बिक्री करने के बाद, विदेशी संस्थागत निवेशक भारतीय स्टॉक बाजार के प्रमुख क्रेता बन गए तथा उन्होंने अगस्त-सितंबर 2006 के दौरान भारी खरीद की। भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों ने जुलाई-सितंबर 2006 के दौरान 11,213 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश किया है जिसने मई 2006 में हुई बिक्री के प्रभाव को

सारणी 41 : कंपनियों का वित्तीय कार्यनिष्पादन

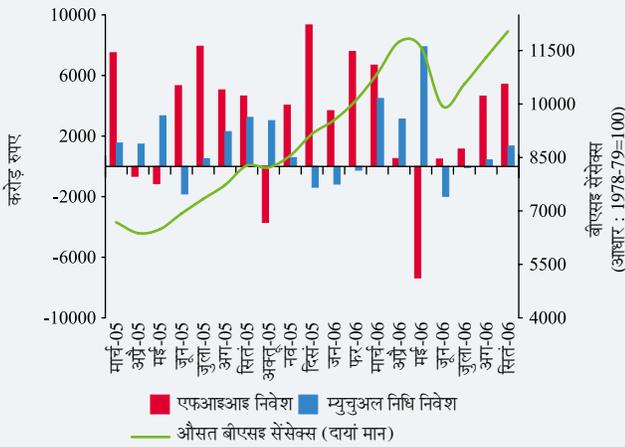
(प्रतिशत वृद्धि दर)

मद	2003-04	2004-05	2005-06*	2005-06				2006-07
				ति. 1	ति. 2	ति. 3	ति. 4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
बिक्री	16.0	24.1	16.9	18.5	16.4	13.2	19.5	25.6
व्यय	14.4	22.9	16.4	18.0	16.3	12.7	18.9	24.6
सकल लाभ	25.0	32.5	20.3	32.0	19.1	21.2	16.6	33.9
ब्याज	-11.9	-5.8	1.9	-13.5	-8.0	4.6	3.8	19.9
कर पश्चात लाभ	59.8	51.2	24.2	54.2	27.5	27.0	15.1	34.7
चुनिंदा अनुपात (प्रतिशत)								
बिक्री से सकल लाभ	11.1	11.9	13.0	13.1	13.0	12.8	12.7	15.6
बिक्री पर कर पश्चात लाभ	5.9	7.2	8.7	8.6	8.5	8.6	8.7	10.6
ब्याज व्याप्ति अनुपात (संख्या)	3.3	4.6	6.4	6.0	6.2	6.2	7.8	7.2
बिक्री पर ब्याज	3.4	2.6	2.0	2.2	2.1	2.1	1.7	2.2
सकल लाभ पर ब्याज	30.7	21.8	15.7	16.6	16.2	16.2	13.7	13.9
ज्ञापन मदें (राशि करोड़ रुपयों में)								
कंपनियों की संख्या	2,214	2,214	2,210	2,355	2,361	2,366	2,415	2,228
बिक्री	4,42,743	5,49,449	7,74,578	1,94,608	2,12,693	2,19,098	2,49,971	2,34,610
व्यय	4,22,110	5,14,574	6,66,690	1,66,972	1,83,717	1,88,934	2,18,511	1,95,556
मूल्यहास प्राक्धान	20,406	22,697	28,883	7,137	7,617	7,748	8,340	8,449
सकल लाभ	49,278	65,301	1,00,666	25,577	27,620	28,135	31,652	36,567
ब्याज	15,143	14,268	15,789	4,241	4,467	4,555	4,348	5,083
कर पश्चात लाभ	26,182	39,599	67,506	16,726	18,169	18,790	21,634	24,845

टिप्पणी: 1. वृद्धि दर पिछले वर्ष की तदनुसारी अवधि की तुलना में संदर्भाधीन अवधि के स्तर में परिवर्तन का प्रतिशत है।
2. स्तंभ (2) तथा (3) के आंकड़े क्रमशः वर्ष 2003-04 एवं 2004-05 के लेखा परीक्षित तुलनपत्रों पर आधारित हैं। अन्य आंकड़े गैर वित्तीय गैर सरकारी कंपनियों के लेखा परीक्षित / अलेखा परीक्षित संक्षिप्त परिणामों पर आधारित हैं। कंपनियों के कवरेज में बदलाव के कारण तिमाही के आंकड़े वार्षिक आंकड़ों में जोड़े नहीं गए।

* : अर्न्तम

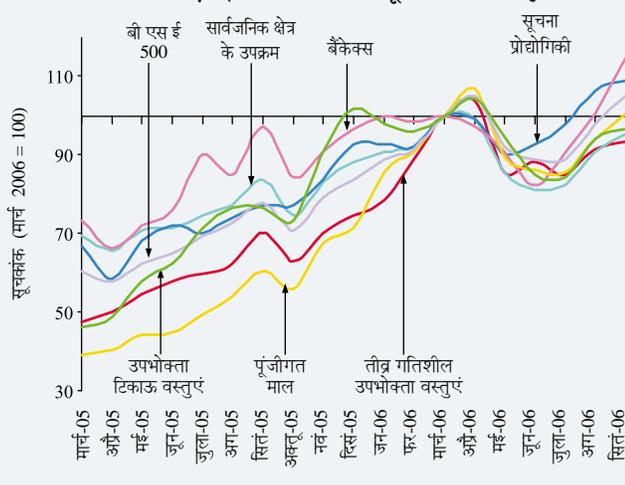
चार्ट 48: संस्थागत निवेश तथा शेयर बाज़ार



समाप्त कर दिया है। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 2006-07 (20 अक्टूबर 2006 तक) में 10,276 करोड़ रुपए (2.2 बिलियन अमरीकी डॉलर) की शुद्ध खरीद की है जबकि इसकी तुलना में पिछले वर्ष इसी अवधि में 19,739 करोड़ रुपए (4.5 बिलियन अमरीकी डॉलर) की शुद्ध खरीद की गई थी। म्युचुअल फंडों ने भी चालू वित्तीय वर्ष के दौरान (20 अक्टूबर 2006 तक) 10,343 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश किया है जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 10,459 करोड़ रुपए था (चार्ट 48)।

प्रमुख सूचकांकों और क्षेत्रों ने 2006-07 के दौरान अब तक मिली-जुली प्रवृत्ति दर्शाई है (चार्ट 49)। बिंदु-दर-बिंदु आधार पर (23 अक्टूबर 2006 तक) बीएसई 500 में 7.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि बीएसई स्माल कैप तथा बीएसई मिड-कैप में मार्च 2006 के अंत तक क्रमशः 1.9 प्रतिशत एवं 0.4 प्रतिशत की गिरावट हुई। प्रमुख क्षेत्रों में, तेल और गैस क्षेत्र में 19.6 प्रतिशत का लाभ हुआ है, साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी (17.6 प्रतिशत), बैंकिंग

चार्ट 49 : बी एस ई सेक्टरल शेयर सूचकांकों की प्रवृत्ति



सारणी 42: शेयर बाज़ार संकेतक

संकेतक	बीएसई				एनएसई			
	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-सितंबर		अप्रैल-मार्च		अप्रैल-सितंबर	
	2004-05	2005-06	2005-06	2006-07	2004-05	2005-06	2005-06	2006-07
1	2	3	4	5	6	7	8	9
बीएसई सेसेक्स/एसएण्डपी सोएनएक्स निफ्टी								
अवधि के अंत में औसत	6493	11280	8634	12454	2036	3403	2601	3588
परिवर्तनशीलता	5741	8279	7187	11167	1805	2513	2205	3280
वेतन/अर्जन अनुपात (अवधि के अंत में)*	11.16	16.7	9.70	7.65	11.28	15.6	8.75	7.76
कुल कारोबार (करोड़ रुपए)	15.61	20.92	17.80	21.34	14.60	20.26	16.15	20.92
बाज़ार पूंजीकरण (करोड़ रुपए)	5,18,716	8,16,074	3,58,770	4,45,090	11,40,071	15,69,556	6,95,049	9,23,664
(अवधि के अंत में)	16,98,429	30,22,191	22,54,378	31,85,678	15,85,585	28,13,210	20,98,263	29,94,132

* : बीएसई सेसेक्स में शामिल 30 शेयर और एस एंड पी सोएनएक्स निफ्टी में शामिल 50 शेयरों के लिए।

प्रतः शेयर बाज़ार, मुंबई (बीएसई) और भारतीय राष्ट्रीय शेयर बाज़ार लि. (एनएसई)।

(15.9 प्रतिशत), उपभोक्ता टिकाऊ वस्तु क्षेत्र (4.5 प्रतिशत), पूंजीगत माल (3.8 प्रतिशत), और धातु (0.6 प्रतिशत) में वृद्धि हुई है। दूसरी ओर, तेजी से उपयोग किए जाने वाली उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में 9.6 प्रतिशत का नुकसान हुआ है, साथ ही हेल्थकेयर में (6.5 प्रतिशत) तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (5.0 प्रतिशत) एवं आटो में (0.1 प्रतिशत) की हानि हुई है।

बीएसई सूचकांक में शामिल 30 शेयरों के मूल्य-अर्जन अनुपात जून 2006 के अंत में 19.4 प्रतिशत से बढ़कर 23 अक्टूबर 2006 को 21.3 प्रतिशत होगए (सारणी 42)। बीएसई द्वारा बाज़ार के पूंजीकरण में जून 2006 के अंत और 23 अक्टूबर 2006 के बीच 21.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

एनएसई में 2006-07 के दौरान (सितंबर 2006 के अंत तक) नकदी खंड का कुल टर्नओवर 9,23,664 करोड़ रुपए था जो वर्ष 2005 की इसी अवधि के टर्नओवर से 32.9 प्रतिशत अधिक था (चार्ट 50)। दूसरी ओर, 2006-07 के दौरान (सितंबर 2006 के अंत तक) व्युत्पन्न खंड का कुल टर्नओवर 35,06,885 करोड़ रुपए हो गया जो पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि के टर्नओवर से दुगुना था।

चार्ट 50: नकद तथा व्युत्पन्न खंड में टर्न ओवर : एनएसई

